

कीड़े खाओ, धरती बचाओ

राष्ट्र संघ के खाद्य व कृषि आयोग ने लोगों को सलाह दी है कि यदि वे अपनी धरती को बचाना चाहते हैं, तो उन्हें झिगुर बिरयानी खाना शुरू कर देना चाहिए। यह सलाह हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट 'एडिबल इंसेक्ट्स: फ्रॉस्पेक्ट्स फॉर फूड एंड फीड सिक्यूरिटी' में दी गई है।



रिपोर्ट के शीर्षक का हिन्दी तर्जुमा होगा - खाद्य कीट: खाद्यान्न व पशु आहार सुरक्षा की भावी संभावनाएं। रिपोर्ट में कहा गया है कि कीट हमारे भोजन में काफी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इनमें प्रोटीन की काफी मात्रा होती है और इनका उत्पादन सस्ता होता है। इसके अलावा, कीटों को खाने से पर्यावरण सम्बंधी लाभ भी मिलेंगे।

संगठन का कहना है कि सामान्य मांस खाना पोषण प्राप्त करने का कार्यक्षम तरीका नहीं है क्योंकि इन पशुओं को आप जो दाना खिलाएंगे वह फसलों से प्राप्त होगा। अब 1 कि.ग्रा. गौमांस पैदा करने के लिए 10 कि.ग्रा. दाने की ज़रूरत होती है। यानी फसलों से प्राप्त उत्पादन की बरबादी हो रही है। इसके विपरीत यदि आप 1 कि.ग्रा. झिगुर का उत्पादन करना चाहें तो वह मात्र 1.7 कि.ग्रा. पशु आहार

लेगा। है ना फायदे का सौदा? इसका मतलब यह भी है कि सामान्य मांस खाने के लिए काफी कृषि भूमि की ज़रूरत होती है और खाद, कीटनाशक वगैरह का उपयोग होता है।

उपरोक्त आधार पर खाद्य व कृषि संगठन का निष्कर्ष है कि

झिगुर सामान्य मांस के मुकाबले 12 गुना बेहतर साबित होंगे। यदि हम बराबर मात्रा में झिगुर और कोई अन्य मांस प्राप्त करना चाहें तो झिगुर के उत्पादन में कहीं कम ज़मीन लगेगी और रसायनों का उपयोग भी कम होगा। मतलब प्रदूषण भी कम होगा।

मगर खाद्य व कृषि संगठन जैसी संस्थाओं के साथ दिक्कत यह है कि वे भोजन को एक तकनीकी मसला भर मानते हैं। पर्यावरण वगैरह तो ठीक है मगर कितने लोग हैं, जो अपना सामान्य भोजन छोड़कर धरती को बचाने की खातिर झिगुर और टिड्डे और तिलचट्टे खाने को तैयार होंगे। फिलहाल तो ऐसा नहीं लगता कि सिर्फ पर्यावरण का नाम जपकर कीटों को थाली में पहुंचाया जा सकेगा। (स्रोत फीचर्स)